31/7/2020

Lecture Notes

B.A Part II Hons

Paper III

Topic —

Research Problems:

Hypotheses & Varibles

अनुसंधान की समस्या - प्राक्कल्पनाएँ तथा परिवर्त्य

Dr. Ku. Sadhana Prasad

Associate Prof.

Dept of Psychology

अनुसंधान की समस्या - प्राक्कल्पनाएँ तथा परिवर्त्यें
Research Problems, Hypotheses and Varibles.

9Q
171

Ans— "समाधान के लिए प्रस्तावित किसी प्रश्न को ही समस्या कहते हैं। सामान्यत: समस्या का अस्तित्व तबतक रहता है जबतक कि प्रस्तावित प्रश्न के समाधान के लिए कोई हल उपलब्ध नहीं हो जाता।"

इस प्रकार एक समस्या के समाधान के साथ उसका अंत हो जाता है। फिर, उससे नई दिशा मिलते ही किसी नये समस्या का सृजन हो जाता है, शोध का क्रम इस प्रकार निरंतर चलता रहता है।

शोध वैज्ञानिक Kerlinger के अनुसार:—
"समस्या एक ऐसा प्रश्नवाचक वाक्य होता है, जो दो या दो से अधिक परिवर्त्यों के पारस्परिक संबंधों के बारे में पूछा जा सकता है।"

समस्या हमेशा दो या दो से अधिक परिवर्त्यों का संबंध दर्शाता है। इसमें जो परिवर्त्य कारक-रूप से अन्य परिवर्त्यों को प्रभावित करता है, उसे 'स्वतंत्र परिवर्त्य' (Independent variable) कहते हैं। अन्य सभी परिवर्त्य जो स्वतंत्र परिवर्त्य के कारण प्रभावित होकर उत्पन्न होते हैं, उन्हें 'आश्रित परिवर्त्य' (Dependent variable) कहते हैं। स्वतंत्र परिवर्त्य को ही 'प्रयोगात्मक परिवर्त्य' (Experimental varible) भी कहते हैं।

समस्या की विशेषताएँ — वैज्ञानिक ढंग से समस्या-कथन (Problem-Statement) द्वारा समस्या का स्वरूप औपचारिक हो जाता है। इस प्रकार, शोध का प्रथम आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

(1) प्रश्न-सूचक कथन होना (Interrogative Statement)
समस्या कथन सरल साध्य (Simple proposition) के रूप में होता है पर इसका प्रश्न-सूचक कथन अधिक वैज्ञानिक हो जाता है। इसका रूप अनेकार्थक (ambiguous) तथा जटिल (complex) कदापि नहीं होने देना चाहिए।

जैसे — "क्या प्रलोभन बच्चों के शिक्षण को धनात्मक रूप से प्रभावित करता है?
"क्या विश्रामकाल पाठ के धारण- क्षमता को बढ़ा देता है?
"क्या माता-पिता के पेशे का प्रभाव बच्चों के व्यवसायिक अभिरुचि पर पड़ता है।
"सहशिक्षा (co-education) छात्राओं में सामाजिक स्वीकृति (Social acceptance) तथा सामाजिक बहिष्कार (Social rejection) को किस प्रकार प्रभावित करता है?" आदि।

(2) परिवर्त्यों के निर्धारित करनेवाला (Stating Relations of variables) — समस्या-कथन इस प्रकार सरल साध्य या प्रश्न-सूचक वाक्य द्वारा प्रस्तुत करना चाहिए जिससे दो या दो से अधिक परिवर्त्यों का आपसी संबंध स्पष्ट हो जाए।

जैसे — पहले उदाहरण के समस्या-कथन में 'प्रलोभन' स्वतंत्र परिवर्त्य है और उससे उत्पन्न विद्यार्थियों की 'शिक्षण-उपलब्धियाँ' आश्रित परिवर्त्य हैं। दूसरे समस्या-कथन में 'सीखने का प्रकार' (learning set) एक स्वतंत्र परिवर्त्य है और 'शिक्षण का स्थानांतरण' (Transfer of learning) आश्रित परिवर्त्य है। इन्हीं परिवर्त्यों में संबंध स्थापित करना तथा इनका मापन कर लेना समस्या का समाधान बन जाता है।

निष्कर्ष यह कि समस्या-कथन को हमेशा परिवर्त्यों का संबंध स्पष्ट करनेवाला होना चाहिए।

(3) अनुभवसिद्ध जाँच के योग्य होना (Amenable to Empirical testing) — समस्या-कथन इस प्रकार होना चाहिए जिसके लिए अनुभवसिद्ध जाँच संभव हो जाए। अनुभवसिद्ध जाँच से तात्पर्य है परिवर्त्यों के आपसी संबंधों का परीक्षणीय ढंग से स्पष्टीकरण हो जाना तथा उनका मापन संभव हो जाना।